निराशा को पास न फटकने दें

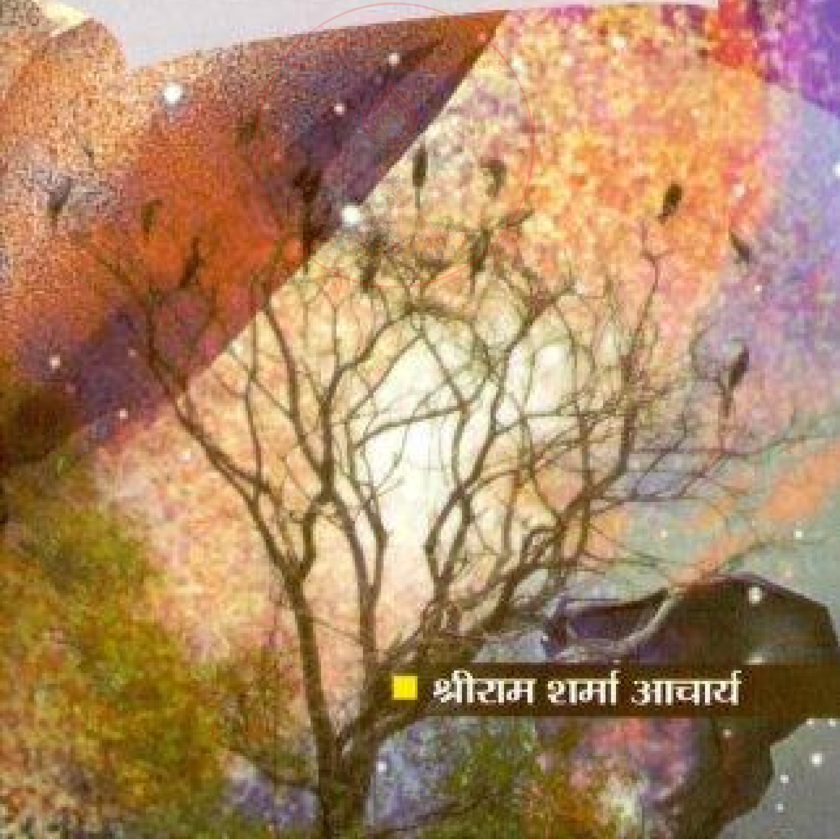

श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

निराशा को पास न फटकने दें
जीने का आनन्द उत्साह से मिलेगा

अतुलित वैभव, अनन्त-धन और अगणित सुविधाओं के होते हुए भी निराश-व्यक्ति का जीवन इस संसार में भारतुल्य ही होता है । निराशा महा व्याधि है जो व्यक्ति की सम्पूर्ण आध्यात्मिक तथा मानसिक शक्तिओं को नष्ट करके रख देती है । आशा, उल्लास और उत्साह-विहीन जीवन में आनन्द नहीं आता । निराशा को शास्त्रों में पाप बताया गया है । जिससे स्वयं को आनन्द न मिले, औरों को भी कुछ प्रसन्नता न मिले उस निराशा से आखिर फ़ायदा भी क्या हो सकता है ?

जिन शक्तियों से मनुष्य जीवन के निर्माण कार्य पूरे होते हैं, उत्साह उनमें प्रमुख है । इससे रचनात्मक प्रवृत्तियाँ जागती हैं और सफलता का मार्ग खुलता है । उत्साह के द्वारा स्वल्प साधन और बिगड़ी हुई परिस्थितियों में भी लोग आत्मोन्नति का मार्ग निकाल लेते हैं । बाल्मीकि-रामायण का एक सुभाषित है-

उत्साहो बलवानार्य नास्त्युत्साहात्परं बलम् ।
सोत्साहस्य त्रिलोकेषु न किञ्चिदपि दुर्लभम् ॥

अर्थात्-"हे आर्य ! उत्साह में बड़ा बल होता है, उत्साह से बढ़कर अन्य कोई बल नहीं है । उत्साही व्यक्ति के लिये संसार में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है ।"

कार्य कैसा भी क्यों न हो उसे पूरा करने के लिये उत्साह जरूर चाहिये । निरुत्साहित होकर काम करने में कभी सफलता नहीं मिलती । आप अपने जीवन को सफल बनाना चाहते हों तो आपको अपने उद्देश्य के प्रति उत्साही बनना पड़ेगा, अपनी सम्पूर्ण सामर्थ्य से उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करना होगा । अरुचि और अनुत्साह से काम करेंगे तो थोड़ी बहुत जो सफलता मिलने वाली भी होगी वह भी न मिलेगी । इसके विपरीत यदि रुचि और साहस के साथ काम करेंगे तो कठिन कामों को पूरा करने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिये भी एक सहज-स्थिति प्राप्त हो जायगी ।

यह निर्विवाद सत्य है कि आत्मोत्थान की सिद्धि कार्य क्षमता बढ़ाने की इच्छा, लोकप्रिय बनने की भावना तथा सफलता और मार्गदर्शन की महत्त्वाकाँक्षा- यह सभी मनुष्य के चरित्र-निर्माण में प्रभाव डालती हैं । इन आवश्यक गुणों का जागरण मनुष्य अपने स्वाभिमान और आत्म-विश्वास के द्वारा करता है पर इनके धारण करने की क्षमता केवल उत्साह में है । स्वाभिमानी व्यक्ति, भले ही वह डकैत ही क्यों न हों कायर व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक लगन के साथ कार्य करते हैं । इसलिये उन्हें प्राय: अपनी इच्छायें पूरी करने में और महत्ता प्रदर्शित करने में सहायता मिल जाती है । भले कार्यों में तो स्वाभिमान और लगन से और बृहत्तर शक्ति आती है । इससे नई शक्ति, नवीन प्रेरणा प्रतिक्षण मिलती रहती है । वे अपने लक्ष्य के प्रति अधिक उत्साह से प्रयत्नशील होते हैं ।

निराश व्यक्ति अपने कर्त्तव्यों को भी अनिच्छा तथा हीनता की भावना से देखते हैं , फलस्वरूप उनके जीवन में किसी तरह की सुन्दरता का, सम्पन्नता का उदय नहीं हो पाता । उनके आश्रित और सहारे में पल रहे स्वजन परिजन भी अविकसित रह जाते हैं । इसलिये उत्साह-हीनता को एक तरह का अपराध ही कहा जायगा । कर्त्तव्य को बोझ और विवशता समझकर नहीं जीवन का लक्ष्य समझकर किया जाना चाहिये । किसी सत्य-तथ्य या आदर्श के प्रति कोई कह देने मात्र से वफादार नहीं समझा जायगा, वरन् उन कार्यों और आदर्शों की पूर्ति के लिये उसे उत्साह प्रदर्शित करना होगा । तभी उसकी मान्यतायें पुष्ट मानी जा सकती हैं और उनसे औरों को भी प्रेरणा मिल सकती है । "विद्याध्ययन बड़ी अच्छी चीज़ है ।" इतना कह देने मात्र से आपके बच्चे उसके प्रति अपनी रूचि प्रदर्शित नहीं करेंगे । वे तो आपकी निष्ठा से प्रभावित होते हैं । आपमें सचमुच यदि किसी आदर्श के प्रति गहरी दिलचस्पी है तो दूसरों को उसके अनुसरण की शिक्षा न देनी पड़ेगी । संसार में साहसी और निष्ठावान् व्यक्तियों के पीछे स्वत: लोग अनुगमन करते हैं, उन आदर्शों को जीवन में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धारण करने में प्रसन्नता अनुभव करते हैं ।

इतिहास में मोड़ देने वाले व्यक्ति ऐसे ही हुए हैं । नव-निर्माण की रूप रेखा बनाने वाले बहुत मिल सकते हैं किन्तु जब तक कोई उत्साही पुरुष उसमें प्राण नहीं फूँकता तब तक कोई ठोस निष्कर्ष नहीं निकलते । स्वराज्य के प्रति आस्था रखने वाले व्यक्ति बापूजी से पहले भी हुए हैं, धार्मिक निष्ठा जागद्गुरु शंकराचार्य के पूर्व भी थी पर राजनीतिक जीवन में हलचल उत्पन्न करके स्वराज्य प्राप्त करने का श्रेय गाँधी जी को ही दिया जाता है । उसी तरह आध्यात्मिक आस्थाओं को विशाल भू-भाग में पुनर्जीवित करने का महान् कार्य जगद्गुरु शंकराचार्य ही कर सके थे ।

कैसी ही दुःखदायक और विषम परिस्थिति क्यों न आ जाय उत्साह सदैव हमारा सहायक सिद्ध होता है । संसार के इतिहास में जितने अमर, महापुरुष हुए हैं उनमें अपनी-अपनी तरह के धार्मिक, राजनैतिक, समाज सुधारक कैसे ही गुण और विशेषतायें रहीं हों पर एक जो सब में समान रूप से दिखाई देता है, वह है उत्साह ! उत्साह का अर्थ है अपनी मान्यताओं के प्रति दृढ़ता । हम जो कहते हैं, उसको कितने अंशों में पूरा कर सकते हैं, इससे उस कार्य के प्रति अपना विश्वास प्रकट होता है और उसी के अनुरूप प्रभाव भी उत्पन्न होता है । उत्साह कहने की नहीं करने की शैली का नाम है ।

हम किस तरह उत्साही बनें, यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है । किसी को भाग्यवश, धन या साधनों के बदले इस महान् गुण की उपलब्धि होती हो, यह तो सम्भव नहीं दिखाई देता । ऐसा रहा होता तो वह कुछ व्यक्तियों की ही बिरासत रही होती । सीमित शक्ति, सामर्थ्य और साधनों वाले व्यक्ति भी अपने अन्तर का उत्साह जगा सकते हैं । मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि वह मानवीय व्यक्तित्व का सहज गुण है, जिसे प्रयत्न और परिस्थितियों द्वारा जगाया जा सकता है । मान लीजिये एक कक्षा के दो विद्यार्थी परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाते हैं । यह घटना दोंनों के लिये समान है । एक इस घटना से निराश होकर के पढ़ाई छोड़कर घर बैठ जाता है और सामान्य श्रेणी का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन जीने लगता है । दूसरे का उत्साह ठण्डा नहीं हुआ । उसने परिस्थितियों का मुकाबला किया और दूसरे वर्ष फिर पढ़ाई में लग गया । कठिनाईयाँ जरूर आईं पर अन्ततः उसको सफलता मिल गई और वह अच्छी नौकरी पाने के योग्य हो गया । प्रयत्न और परिस्थितियों ने दो व्यक्तियों के जीवन में इतना अन्तर ला दिया । ऐसी अनेक घटनायें व्यावहारिक जीवन में रोज ही सामने आती हैं । लोग कहते हैं, अमुक व्यक्ति का भाग्य अच्छा था पर यदि सचमुच देखा जाय, कारणों की गहराई में धँसा जाय तो यह सिद्ध होगा कि सफल व्यक्ति ने अपना भाग्य अपने उत्साह के बल पर बनाया है । पुरुषार्थ और प्रयत्न से ही भाग्य निर्मित होते हैं । यश, श्री और लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।

स्वाभाविक कार्य प्रायः सभी पूरे करते हैं । उनमें किसी तरह की रुचि अपेक्षित नहीं होती । पर जब कहीं कोई कठिनाई उत्पन्न हो जाती है, उस समय उस चुनौती को स्वीकार करने के लिये एक अन्तः प्रेरणा उठती है । निर्बल प्राण व्यक्ति आत्मा की इस आवाज को ठुकरा देते हैं, जिससे उनका जीवन भी दुःखी और असहाय अनाथों जैसा बना रहता है । पर जिनके हृदय में कठिनाइयों से संघर्ष करने का उत्साह होता है, वे लोग बाजी मार ले जाते हैं और अपने जीवन को सब तरह से सुखी एवम् समुन्नत बनाते हैं । निराश व्यक्ति केवल ईर्ष्या-द्वेष की भावनायें ही फैला सकते हैं किन्तु उत्साही पुरुषों को किसी से शिकायत नहीं होती । अपना पथ स्वयं निर्धारित करते हैं और उत्साह बल से उसे पूरा करके दिखा देते हैं ।

मनुष्य की जिन्दगी निराशा के अँधियारे में नष्ट कर डालने की वस्तु नहीं है । जीवन एक साहसपूर्ण अभियान है । उसका वास्तविक आनन्द संघर्षों में है । निराशा और कुछ नहीं, मौत है पर लगन और उत्साह से मौत को भी जीत लिया जाता है । इस जीवन में भी निराश होकर जीना कायरता नहीं तो और क्या है ? परमात्मा ने हमें इसलिये नहीं पैदा किया कि हम पग-पग पर विवशताओं पर आँसू बहाते फिरें । हमें सिंह पुरुषों की तरह जीना चाहिए । उत्साहपूर्वक जीना चाहिए । इस महामन्त्र को यदि अच्छी प्रकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सीख लें तो आपको धन की भीख, साधनों का अभाव–यह कुछ भी परेशान करने वाले नहीं । आपके हृदय में उत्साह का बल होना चाहिए । यह बल आप पा गये तो इस जीवन में आपको सुख ही सुख रहेगा । आप सदैव प्रसन्नता में आत्म–विभोर बने रहेंगे ।

निराशा से दूर ही रहिये

रात और दिन की तरह मनुष्य के जीवन में आशा–निराशा के क्षण आते जाते रहते हैं । आशा जहाँ जीवन में सञ्जीवनी शक्ति का संचार करती है, वहाँ निराशा मनुष्य को मृत्यु की ओर ले जाती है । क्योंकि निराश व्यक्ति जीवन से उदासीन और विरक्त होने लगता है । उसे अपने चारों ओर अन्धकार फैला हुआ दीखता है । एक दिन निराशा आत्महत्या तक के लिये मजबूर कर देती है मनुष्य को, जबकि मृत्यु के मुँह में जाता हुआ व्यक्ति भी आशावादी विचारों के कारण जी उठता है । श्रेयार्थी को निराशा की बीमारी से बचना आवश्यक है अथवा यह तन मन दोनों को ही नष्ट कर देती है ।

निराशा का बहुत कुछ सम्बन्ध मानसिक शिथिलता से भी होता है, जो किसी बीमारी या शरीर की गड़बड़ी से पैदा हो जाती है । कभी कई अप्रत्यक्ष रूप से भी शरीर की आन्तरिक स्थिति में परिवर्तित होते रहते हैं और उनका प्रभाव मानसिक स्थिति पर भी पड़ता है । शरीर की तनिक सी गड़बड़ी का प्रभाव भी मन पर पड़ता है । किसी बीमारी के बाद भी अक्सर हममें निराशा की भावना पैदा होती है । कभी–कभी कब्ज, गन्दी वायु, विश्राम का प्रभाव दौड़धूप का जीवन आदि के कारण भी निराशा, उदासीनता पैदा हो जाती है ।

लेकिन उपर्युक्त बातें ऐसी हैं जिन्हें सरलता से एक सामान्य ज्ञान रखने वाला व्यक्ति ठीक कर सकता है । अपने स्वास्थ्य का सुधार, व्यवस्थित, सन्तुलित जीवन, प्रकृति नियमों का अवलम्बन लेकर निराशा के इन कारणों को सरलता से दूर किया जा सकता है । स्वास्थ्य ठीक होते ही मन भी स्वस्थ हो जाता है । फिर उस पर ऐसे निषेधात्मक प्रभाव नहीं होते ।

कई बार निराशा का सम्बन्ध मनुष्य की अनुभूतियों से उत्पन्न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिक्रिया या अन्तर्मन में छिपा हुआ असंतोष, अशान्ति आदि होते हैं । कइयों की मानसिक स्थिति बड़ी जटिल होती है । निम्न बातों का ध्यान रखकर निराशा से बचा ही नहीं जा सकता, उसे सर्वथा दूर भी किया जा सकता है ।

हमारी निराशा का बहुत कुछ कारण होता है-यथार्थ को स्वीकार न करना, अपनी कल्पना और मनोभावों की दुनियाँ में रहना । यह ठीक है कि मनुष्य की कुछ अपनी भावनायें, कल्पनायें होतीं हैं, किन्तु सारा संसार वैसा ही बन जायेगा यह सम्भव नहीं होता । हाँ, अपनी भावनाओं के अनुकूल जीवन भर काम करते रहना अलग बात है । किन्तु दूसरे भी वैसा करने लगें, वैसे ही बन जायें यह कठिन है । यह ठीक उसी तरह है जैसे कोई व्यक्ति चाहे रात न हो केवल दिन ही दिन रहे या बरसात होवे नहीं । संसार परिवर्तनशील और वैभिन्यपूर्ण है । अपने मत से भिन्न व्यक्ति का भी सम्पर्क होता है । धरती पर मनुष्य के न चाहने पर भी बुढ़ापा, मृत्यु, संयोग-वियोग, लाभ-हानि के क्षण देखने पड़ते हैं ।

जीवन जैसा है उसी रूप में स्वीकार करने पर ही यहाँ जीवित रहा जा सकता है । यथार्थ का सामना करके ही आप जीवन-पथ पर चल सकते हैं । ऐसा ही नहीं हो सकता कि जीवन रहे और मनुष्य को विपरीतताओं का सामना न करना पड़े । यदि आप जीवन में आई विरोधी परिस्थितियों से हार बैठे हैं, अपनी भावनाओं के प्रतिकूल घटनाओं से ठोकर खा चुके हैं और फिर जीवन की उज्ज्वल सम्भावनाओं से निराश हो बैठे हैं तो उद्धार का एक ही मार्ग है-उठिये और जीवन पथ की कठोरताओं को स्वीकार कर आगे बढ़िये । तभी कहीं आप उच्च मंजिल तक पहुँच सकते हैं । जीना है तो यथार्थ को अपनाना ही पड़ेगा । और कोई दूसरा मार्ग नहीं है जो बिना इसके मंजिल तक पहुँचा दे । कई बार अप्रिय बातों को अक्सर हम रोक नहीं पाते ।

बहुत से व्यक्ति अपने बीते हुए जीवन की गलतियाँ, अपमान, हानि, पीड़ाओं का चिन्तन करके निराश हो जाते हैं और कई भविष्य के खतरों की कल्पना करके अवसादग्रस्त हो जाते हैं । लेकिन यह दोनों ही स्थितियाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानसिक अस्वस्थता के चिन्ह हैं । जे बातें हो चुकीं, जो घटनायें बीत गईं उन पर विचार करना, उन्हें स्मरण करना, उतनी ही बड़ी भूल है, जितना गड़े मुर्दे उखाड़ना । जो बातें बीत चुकीं उन्हें भुला देने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं है । इसी तरह भविष्य की भयावह तस्वीर बना लेना भी भूल है । कई बार वे बातें होती ही नहीं जिनकी हम पहले से कल्पना करके परेशान होते हैं । आगे क्या होगा, यह तो भविष्य ही बतायेगा, किन्तु निराशा से दूर रहने और जीवन को सरस, आशावादी बनाये रखने का यह मार्ग है कि भविष्य के प्रति उज्ज्वल सम्भावनाओं का विचार किया जाय । प्रसन्नता और सुख के जो क्षण आवें उनका पूरा-पूरा उपयोग किया जाय । सुखद भविष्य की कल्पनायें मानस-पटल पर संयोजी जायें ।

यह हो नहीं सकता कि किसी व्यक्ति के जीवन में केवल परेशानियाँ ही आवें, अँधेरा ही हो । जीवन में उज्ज्वल पक्ष भी होता है । हम इस उज्ज्वल पक्ष को देखें, इस पर विचार करें तो निराशा पास नहीं फटक सकती । लेकिन हम जीवन के अँधेरे पहलू को ही सामने रखकर विचार करते हैं और फलस्वरूप निराशा ही हाथ लगती है ।

निराशा का मनुष्य के दृष्टिकोण से अधिक सम्बन्ध होता है । जैसी उनकी भावनायें होती हैं वैसी ही उनको प्रेरणायें भी मिलती हैं । जिनका दृष्टिकोण, भावनायें स्वार्थप्रधान होती हैं, जो अपने ही लाभ के लिये जीवन भर व्यस्त रहते हैं, उन्हें निराशा, असन्तोष, अवसाद ही परिणाम में मिलता है । यह एक बहुत बड़ा मनोवैज्ञानिक सत्य है । जिनके जीवन में परमार्थ, सेवा, जन-कल्याण की भावनायें काम करती हैं उनमें आशा, उत्साह, प्रसन्नता की धारा निःसृत होती रहती है । अतः हम दूसरों की सेवा करके, जरूरत मन्दों की मदद करके, दूसरों के लिये भले काम करके निराशा से पीछा छुड़ा सकते हैं । परमार्थ जीवी व्यक्तियों के जीवन में कभी निराशा पैदा नहीं होती-यह उतना ही सत्य है जितना सूर्य अपनी यात्रा से कभी नहीं थकता । बड़े से बड़ा स्वार्थ सिद्ध होने पर भी मनुष्य को जीवन में एक अभाव महसूस होता है और उससे प्रेरित निराशा अवसाद उसे ग्रस्त कर लेते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। स्वार्थ-प्रधान जीवन ही निराशा के लिये उर्वरक क्षेत्र होता है।

किसी बँधे-बँधाये खास ढर्रे पर चलते रहने से भी निराशा उत्पन्न हो जाती है। अक्सर सरकारी नौकरी से निवृत्त होने वालों में से बहुत से जीवन के अन्तिम दिन बड़ी निराशा में बिताते हैं। इसी तरह केवल अपने रोजगार में या किसी अन्य काम में एकाकी लगे रहने पर जीवन से ऊब पैदा हो जाती है और फिर यही निराशा का कारण बन जाता है। जीवन-निर्वाह के लिये हम कुछ भी काम करें यह बुरा नहीं है, किन्तु जीवन की अन्य प्रवृत्तियों को कुण्ठित कर लेना निराशा के लिये जिम्मेदार है। कला, संगीत, साहित्य, खेल, मनोरंजन, सामाजिक सम्पर्क, यात्रा, तीर्थाटन, धार्मिक कृत्य आदि जीवन के अनेक पहलू हैं जिन्हें अपने दैनिक-क्रम में स्थान देना आवश्यक है।

निराशा का सम्बन्ध अपने बारे में बहुत ज्यादा सोचते रहने से भी है क्योंकि इससे अपराध-भावना जोर पकड़ती है। मनुष्य अपने आपको अपराधी, कुकर्मी पाप करने वाला समझता है। यों हर मनुष्य अपने जीवन में कभी न कभी बुराइयाँ कर बैठता है। बुरे काम हो जाते हैं। लेकिन यह एक मानसिक कमजोरी है कि हम अपनी बुराइयों पर अधिक सोच विचार करने लग जाते हैं। इससे बचपन में भूलवश किये गये मामूली कुकर्म भी भारी अपराध जान पड़ते हैं और हम अपने आपको एक बहुत बड़ा अपराधी समझने लगते हैं। इससे मनुष्य का मन गिर जाता है। हीनता की भावना पैदा होती है और फिर निराशा घर दबाती है। अपने बारे में अधिक सोच-बिचार न करें। जीवन को एक खेल समझकर जियें जिसमें भूल हो सकती है, हार भी होती है तो जीत भी। बचपन के कुसंग अज्ञान प्रेरित भूलों के कारण भविष्य में होने वाले महापुरुष भी बड़ी-बड़ी बुराइयाँ कर सकते हैं। अज्ञान, नासमझी की अवस्था में कुछ भी होना सम्भव है। समझ आने पर उसे दूर भी किया जा सकता है। किन्तु एक सामयिक गलती को जीवन भर रटते रहना अपने मनोबल को क्षीण करते रहना है और उससे फिर निराशा ही पल्ले पड़ सकती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निराशा—मनुष्य की कायरता का एक घृणित चिन्ह

शरीर के जिस अंग में पक्षघात हो जाता है, वह अंग क्रिया हीन, निष्चेष्ट तथा निष्प्राण सा हो जाता है। पक्षाघात की जो स्थिति शरीर में होती है, मस्तिष्क में वही अवस्था निराशा में होती है। नैराश्य, मन की सारी स्फूर्ति को कुचलकर उसे निष्क्रिय बना डालता है। निराश व्यक्ति का कभी किसी काम में जी नहीं लगता, किसी प्रकार लगा भी तो वह अधूरा ही रह जाता है। इससे एक पर एक असफलतायें ही बड़ती जाती हैं। वैसे तो लक्ष्यहीनता, घृणा, उदासीनता, कायरता, अस्थिरता, आदि मनकी नकारात्मक प्रवृत्तियाँ भी मनुष्य के क्रिया—व्यवसायों में दूषित प्रभाव डालती हैं किन्तु निराशा के दुष्परिणाम तो इतने गम्भीर रूप से दिखाई देते हैं कि लोग इसके कारण बात की बात में अपनी जान तक गँवा देते हैं। यह निराशा मनुष्य की घोर शत्रु है। इससे बचने में ही कल्याण है।

अनुमान है कि अमेरिका में प्रतिवर्ष पन्द्रह सौ से भी अधिक लोग आत्म—हत्या करते हैं। संसार के भूभागों में निश्चित ही यह संख्या बहुत बड़ी होगी। सारे संसार में प्रतिवर्ष एक लाख से भी अधिक व्यक्ति आत्मघात कर लेते हैं। प्रतिदिन ५०० से भी अधिक व्यक्तियों की आत्म—हत्या आज के सभ्य संसार के लिये एक बहुत बड़ा कलंक ही है। अकारण ही इस प्रकार जीवन की बाजी लगा देना ही इस युग की सबसे बड़ी और चिन्तनीय समस्या है।

इस आत्म—हत्यायों के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से यह सिद्ध हो चुका है कि ९० प्रतिशत आत्म—हत्याओं का कारण लोगों की निराशा है। परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाना, व्यवसाय में घाटा, मुकदमे की हार, मान—हानि और प्रेम की असफलता आदि—ये कारण इतने बड़े नहीं कि इनसे विक्षुब्ध होकर लोग अपने जीवन का अन्त कर डालें। आये दिन ऐसी घटनायें घटा ही करती हैं। प्रत्येक परीक्षा में पचास प्रतिशत से अधिक लोग अनुत्तीर्ण होते ही हैं, भाव की तेजी—मंदी से व्यवसाय में घाटा आना भी सम्भव है, ऐसे समय निराश व्यक्ति ही अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठते हैं और इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकार के दुष्कृत्य कर बैठते हैं ।

निराशा मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु ईश्वर का अभिशाप है । मनुष्य की शारीरिक और मानसिक शक्तियों को-समूल नष्ट करने वाली है यह निराशा । इन अवसरों पर जिन व्यक्तियों में धैर्य और आत्म विश्वास की कमी हुई उनके पथ-भ्रष्ट होने में किञ्चित देर नहीं लगती ।

निराशा का मूल कारण है आत्म-विश्वास की कमी । अपने ऊपर जिन्हें प्रत्येक क्षण अविश्वास बना रहता है वे पूरे मन से अपना काम नहीं कर पाते, हर जगह हर बात में आशंका करते रहने से किसी काम में सफलता नहीं मिल पाती । इस कारण से उत्पन्न उद्विग्नता, विक्षोभ और दुःख के कारण निराशा का जन्म होता है । छोटी-छोटी सफलतायें भी अविश्वास का उन्मूलन करती हैं और उतने ही अंशों में निराशा का अन्त होता रहता है । कई बार बौद्धिक क्षमता के अभाव के कारण भी ऐसी परिस्थितियाँ आ जाती हैं । समय और क्षमता के अभाव के कारण भी ऐसी परिस्थितियाँ आ जाती हैं । समय और सामर्थ्य से आगे बढ़कर भी जब हम किसी बहुत बड़े लाभ या सफलता की अभिलाषा करते हैं तब भी निराशा का उदय होता है । सफलता के लिये रुचि, समय और स्थान की अनुकूलता, सामर्थ्य और योग्यताऐं भी चाहिए । यदि यह न हुई और सफलता की चाह ज्यों त्यों बनी रही तो अन्त में निराशा के अतिरिक्त और कुछ हाथ लगने वाला नहीं है । इसलिये ऊँची स्थिति प्राप्त करने के लिये पहले छोटे कदम उठाने पड़ते हैं । बी. ए. पास करने के लिये प्रारम्भ में 'अ' और 'ब' भी पढ़ने पड़ते हैं । इस तरह से किये हुए कार्यों में नवीनता और रुचि बनी रहती है । थकावट नहीं आती । अविश्वास, आलस्य और दोष छूटने लगते हैं और प्रतिभा का विकास होने लगता है । यदि ऐसा प्रतीत होने लगे कि इन सीमाओं का उल्लङ्घन कर रहे हैं तो प्रारम्भ से ही धैर्य, साहस और उत्साह का वातावरण बनाते रहने का प्रयत्न करना चाहिए ताकि अन्तिम समय में असफल होने पर भी निराशा न आने पाये । यदि ऐसा कर सके तो उस कार्य को दुबारा पूरा करने की आप में पर्याप्त हिम्मत बनी रहेगी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कदाचित् आप निराशा से मुक्ति नहीं पा रहे हैं तो उसे आप अपने मन में ही न डाले रहिये मन में ही घुलते रहने से स्वास्थ्य का नाश होगा, मानसिक शक्तियाँ क्षीण होंगी । आप घबराइये नहीं, अपने मित्र से सलाह कर लीजिये, वयोवृद्ध अनुभवी व्यक्तियों से उचित परामर्श कर लीजिये । आपका दुःख बट जायेगा, जी हलका हो जायेगा और आगे के लिये एक नई सूझ उत्पन्न होगी । कैसी भी बात क्यों न हो, उसे गुप्त कभी भी नहीं रखना चाहिए, जहाँ तक हो सके अपने परिजनों मित्रों में व्यक्त कर देने से अपनी आधी कठिनाई तत्काल समाप्त हो जाती है । शेष के लिये कोई हल निकल ही आता है ।

अपने विचारों को कार्य रूप में परिणित न करने से भी निराशा पैदा होती है । प्रसिद्ध दार्शनिक गोथे ने लिखा है-"क्रिया में परिणित न होने वाले विचार रोग बन जाते हैं ।" डा. हेनरी के भी ऐसे ही विचार हैं । जिन्होंने लिखा है-"मस्तिष्क जब अपने ही व्यूह में द्रुत गति से चक्कर लगाने लगता है और शारीरिक अवयवों को गति नहीं दे पाता तभी निराशा उत्पन्न होती है ।" अतएव यह सुनिश्चित है कि अपने विचार, अपनी इच्छाओं को पूरी तरह कार्यों में अभिव्यक्त होना चाहिए । यदि ऐसा नहीं हुआ तो अन्तःकरण में घोर अशान्ति छायी रहेगी । अपनी कठिनाइयों को समस्या का रूप मत दीजिये । परिस्थितियों के अनुसार अच्छे-बुरे सभी तरह के परिणाम भुगतने लिये अपना दिल और दिमाग मजबूत रखिये । दिन के चौबीस घन्टे काम में लगे रहिये । न मिलेगा समय, न आयेगी निराशा का सिद्धान्त ही सर्वोत्तम है । इसी तरह उन बातों की कामना करना छोड़ दीजिये तो परिस्थिति साध्य है । जो कुछ मिले उतने से ही सन्तोष कर लिया कीजिये । इससे आपकी मानसिक प्रसन्नता सदैव स्थिर बनी रहेगी ।

संघर्ष के क्षणों में हार मान लेना यह मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है । मनुष्य में वह सभी शक्तियाँ सन्निहित हैं जिनके कारण वह असमय में भी मनचाही सफलतायें प्राप्त कर सकता है । पर इसके लिये विश्वास और लगन की आवश्यकता है । ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जब अपनी अल्प

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शक्तियों का उपयोग करके भी मनोबाँछित सफलतायें प्राप्त की गई हैं, इसका एक उदाहरण इस प्रकार है :-

हिन्दुओं में अब भी यह विश्वास है कि रामायण और महाभारत पढ़ने से लोगों को मोक्ष मिल जाता है । इस बात का पता जब हावड़ा की ८० वर्षीय अशिक्षित अनुबती देवी को चला तो उन्हेंने धैर्य, साहस और आत्म-विश्वास के साथ जोतगिर ग्राम में पढ़ना शुरू कर दिया । यह घटना लगभग ८ वर्ष हुए घटित हुई थी । अब तक इस गाँव में अनुवती के इस साहस के कारण वयस्क शिक्षा की विधिवत् परम्परा चल पंड़ी है । लगता है अब वहाँ कोई निरक्षर नहीं रहेगा । उद्देश्य कैसा भी हो उसकी पूर्ति के लिये अपनी चेष्टाओं को एकाग्र करके लगन और तत्परता के साथ कार्य करें तो सफलता जरूर मिलती है इसमें किसी तरह का सन्देह नहीं है ।

परेशानी तभी तक रहती है, जब तक मन में शंका तथा भय बना रहता है । साहस के हारते ही निर्णय-शक्ति समाप्त हो जाती है । मनुष्य उस विषय पर ठीक विचार नहीं कर पाता, क्योंकि उसकी तर्क शक्ति मन्द पड़ जाती है । मन की इस अराजकता से ही उसकी शक्तियों का पतन होता है और किसी कार्य में सफलता नहीं मिल पाती । मानसिक शक्तियों के दबते ही मनुष्य की प्रतिभा कुन्द हो जाती है और इससे उसकी सारी कार्य-क्षमता समाप्त हो जाती है । उस समय यदि निराशा से बचने का प्रयत्न नहीं करते और आशा, उत्साह की कल्पना नहीं करते तो आपका जीवन बेकार हो जायेगा । इस विनाशकारक वृत्ति को रोकने में ही मनुष्य मात्र का कल्याण है ।

हमारी समस्त निराशाओं का मूल कारण हमारी ईश्वर से भिन्नता है । मनुष्य तब तक अपने आप में बिलकुल असहाय, अरक्षित और अकेला है जब तक कि वह अपने ही अहंभाव तक सीमित रहता है, उसकी निराशा, दुःख और छटपटाहट भी तभी तक रहती है । जो हमेशा परमात्मा को अपने पास समझता है वह सभी निराशाओं और कष्टों से ऊपर उठ जाता है जिन कठिनाइयों और संघर्षों से सामान्य-जन भयभीत बने रहते हैं, ईश्वरवादी उन्हें अपनी प्रगति अपने विकास का माध्यम मानता है और उसका सहर्ष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वागत करता है । आशाओं का केन्द्र भगवान ही है । जो उस पर आस्था रखता है उसके जीवन में आशा का संचार होने लगता है ।

निराश मत होईये अन्यथा सब कुछ खो बैठेंगे

निराशा मनुष्य-जीवन की भयंकर शत्रु है । यह जीवन को घुन की तरह चाटकर खोखला कर देती है । निराशा की पकड़ में फँसे हुए मनुष्य का मन-मस्तिष्क निषेधात्मक प्रवृत्तियों का केन्द्र बन जाता है ।

जो निराश है, वह निर्जीव है । निराश व्यक्ति के जीवन से हर्ष-उल्लास, आमोद-प्रमोद, हास-विलास आदि सारी प्रसन्न प्रवृत्तियों का बहिष्कार हो जाता है । निराशा से घिरा हुआ मनुष्य संसार में बिना पंखों के पक्षी की तरह दयनीय एवम् दुःख-पूर्ण जीवन काटता है ।

निराशा का जन्म अधिकतर असफलताओं से हुआ करता है । असफलता जीवन में असम्भाव्य घटना नहीं है । संसार में सभी असफल होते हैं । कोई विरला ही ऐसा होगा जिसको कभी असफलता का सामना न करना पड़ा हो । संसार के महान् से महान् और सफल से सफल व्यक्ति को अनेकों बार असफलताओं का सामना करना पड़ा है । असफलताओं में जो निराश नहीं होता, निरुत्साहित नहीं होता वह अन्त में इतनी बड़ी सफलता पाता है जो कि स्वर्णाक्षरों में लिखी जा सके । असफलता से निराश होकर बैठा रहना कायरता है । असफलतायें मनुष्य के धैर्य, साहस और पुरुषार्थ की कसौटी हैं । जिस सफलता तक पहुँचते-पहुँचते अनकों असफलताओं को सहन नहीं करना पड़ता है उस सफलता का कोई विशेष मूल्य और महत्व नहीं होता । असफलताओं के पीछे पाई हुई सफलता में एक दिव्य सुख, एक अलौकिक रस होता है । असफलताओं से डरना, भागना अथवा निराश नहीं होना चाहिए । उत्थान का ऊर्ध्वगामी भाग सफलता-असफलताओं के सोपानों से ही बना हुआ है । जो सफल होना चाहता है उसे सहर्ष असफलता को वरण करना होगा ।

असफलता पाने पर जो निराश हो जाता है वह कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता । निराश व्यक्ति की सारी शक्तियों को काठ मार जाता है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निराशा एक ऐसा विष है जो शीघ्र ही मन-मस्तिष्क में फैलकर मनुष्य की सारी स्फूर्ति सारी कार्य क्षमता को मूर्छित कर देता है । निराश व्यक्ति निष्क्रिय होकर किसी काम के योग्य नहीं रहता ।

निराशा एक क्लीवता है और क्लीव व्यक्ति जीवन संग्राम से भयभीत होकर भागा-भागा रहता है । यह प्रतिकूलताओं से टकराने और प्रतिरोधों के बीच गतिशील रहने की हिम्मत नहीं रखता ।

एक कोने में मुँह लटकाये बैठे रहने और नैराश्य पर अपने मन को केन्द्रित किये रहने से मनुष्य इतना नकारात्मक हो जाता है कि छोटे से छोटा काम कर सकने में भी शंकाशील रहता है । काम में हाथ डालते ही उसका पहला भाव यही उठता है-"मुझसे यह काम हो सकना कठिन है ।" यह नकारात्मक भावना इतनी अशुभ और अनिष्टकारी होती है कि किसी भी कार्य को न तो सफल होने देती है और न पूर्ण ।

जो निराश है, वह कायर है और जो कायर है, वह संसार का कोई भी कार्य नहीं कर सकता । असफलता, आलोचना अथवा अवरोध का भय हर समय उसके सिर पर भूत की तरह सवार रहता है ।

निराशा से क्षोभ, क्रोध आवेग और आवेश जैसे अनेकों विकार उत्पन्न हो जाते हैं । बात-बात में चिढ़ना, कुढ़ना और कुण्ठित होना उसका स्वभाव बन जाता है । निराश व्यक्ति के पास कोई न तो बैठना चाहता है और न उससे बात करना चाहता है । नैराश्य से घिरा हुआ व्यक्ति जहाँ बैठता है, वहाँ के सम्पूर्ण वातावरण को ही विषादपूर्ण बना देता है । उसके सम्पर्क से दूसरे व्यक्तियों में उसके कीटाणु प्रवेश करने लगते हैं । निराशा क्षय रोग की तरह ही एक छूत की बीमारी है । निराश एवम् विषादयुक्त व्यक्ति से हर आदमी बचने और भागने की कोशिश करता है ।

नास्तिकता निराशा का सबसे भयंकर एवं अनिष्टकारी फल है । नास्तिक व्यक्ति का आत्म-विश्वास उठ जाता है, जीवन की रुचि समाप्त हो जाती है जिससे अधिकतर ऐसे व्यक्ति आत्म-हत्या के शिकार बनते हैं । संसार में आत्म-हत्याओं की जितनी घटनायें होती हैं, उनमें ९५ प्रतिशत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्म-हत्यायें निराशा के कारण होती हैं ।

निराश व्यक्ति न केवल अपना बल्कि अपने आस-पास के व्यक्तियों का भी मानसिक स्तर गिरा देता है । उसे संसार की सारी सूचनाओं और घटनाओं में केवल निराशा ही दीखती है । फलस्वरूप वह उसी प्रकार की सूचना दूसरों को देता है, जिससे अन्य लोगों में भी निराशा की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है । आहें भरना, उदास रहना, समाज और संसार को कोसते रहने का स्वभाव बन जाने से निराशाग्रस्त व्यक्ति को न किसी से प्रेम हो पाता है और न अपनत्व । उसे संसार में हर व्यक्ति शत्रु और स्वार्थी दिखाई देता है । राष्ट्र के प्रति तक उसकी भावनायें इतनी दूषित हो जाती हैं कि वह उसको हानि पहुँचाने की बात सोचने लगता है । संसार में जितने राष्ट्र द्रोही हुए हैं उनके इस कुत्सित कर्म में निराशा का हाथ अवश्य रहता है । निराश व्यक्ति को पुण्य से, कुनीति से और परमार्थ कार्यों से घोर घृणा हो जाती है, जिससे वह सक्रिय पापी भले ही न बने, मानसिक पातकी तो अवश्य बन जाता है । भीषण तम अपराधों के पीछे निराशा का हाथ अवश्य रहता है ।

नैराश्य को प्रश्रय देने का अर्थ है-संसार के सारे पाप तापों के लिये जीवन का द्वार खोल देना । जिस प्रकार सुनसान और अन्धकार से भरे खण्डहर में कीड़े-मकोड़ों, घास-फूस, चमगादड़, उल्लुओं का निवास हो जाता है, उसी प्रकार निराशा से अन्धेरे मन में कुत्सित भाव, ओछे विचार और विपरीत बुद्धि का निवास हो जाता है ।

निराश व्यक्ति में भय की प्रवृत्ति इस मात्रा तक बढ़ जाती है कि जीवित अवस्था में श्वास-प्रश्वास देते हुए भी उसे हर समय चारों ओर मृत्यु ही मृत्यु दिखाई देती है । उसे संसार का हर व्यक्ति अपने से बलिष्ठ और तेजस्वी दिखाई देता है । सड़क पर चलते, बाग में घूमते और रेल आदि में सफर करते उसे हर समय दुर्घटना और चोट-चपेट लग जाने का भय बना रहता है । अपने इस भय के कारण वह बड़ा ही दब्बू और कायर हो जाता है । किसी को जवाब देना, खुलकर बात करना उसके वश के बाहर हो जाता है । निराशापूर्ण व्यक्ति का जीवन इतना दयनीय हो जाता है कि उस पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उससे निम्न कोट और निम्न योग्यता के व्यक्ति भी तरस खाने लगते हैं ।

मनुष्य को किसी भी अवस्था अथवा परिस्थिति में निराश नहीं होना चाहिए । सौ सफलतायें मिलने पर भी जो एक सौ एकवें बार प्रयत्न करता है, वह अवश्य सफल होता है । सफलता असफलता से निरपेक्ष रहकर निरन्तर कार्यरत रहना ही निराशा से बचने का अमोघ उपाय है । जो व्यक्ति अपने पूरे तन-मन से निरन्तर कार्य में संलग्न रहता है उसे निराश होने के लिये समय ही नहीं रहता ।

निराशा एक भयानक रोग है । जिससे न केवल मानसिक शक्तियों का ह्रास होता है अपितु शारीरिक स्वास्थ्य भी चौपट हो जाता है । निराश व्यक्ति हर समय चिन्ता और क्षोभ से जलता रहता है । जिससे उसे न तो भूख लगती है और न नींद आती है । इससे उसके शरीर-संस्थान पर भयानक प्रतिक्रिया होती है । पाचन क्रिया और रक्त संचार की प्रणाली बिगड़ जाती है, जिससे शरीर व्याधियों का घर बनकर "शरीरम् व्याधि मन्दिरम्" वाली उक्ति चरितार्थ कर देता है । वास्तव में यह उक्ति अवश्य ही किसी निराश हृदय से अपने सजातीय निराश बन्धुओं पर चरितार्थ होने के लिये प्रकट हुई है ।

जहाँ तक हो निराशा की भयंकर बीमारी को अपने पास न आने देना ही ठीक है और यदि वह किसी कारण से आक्रमण कर भी दे तो उसे अधिक देर तक टिकने नहीं देना चाहिए । इसका अनुभव होते ही हास-परिहास, व्यंग, विनोद और मनोरंजन द्वारा इसे तुरन्त भगा देना चाहिए । निराशा को एक क्षण भी प्रश्रय देने का अर्थ है-'जीवन में विषाद के गहरे बीज बो लेना ।'

निराशा—जीवन का एक महान् अभिशाप

संघर्षमय जीवन पथ पर आगे बढ़ते समय मनुष्य को कई बार अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है । रात और दिन, धूप-छाँह, सर्दी-गर्मी की तरह जीवन में सुख-दुःख, हानि-लाभ, सफलता-असफलता आदि का संयोग चलता ही रहता है । लक्ष्य जितना बड़ा होगा विपरीततायें भी उसी अनुपात में आयेंगी । जीवन में न जाने कितने अवसर आते हैं जब मनुष्य को कडुवे घूँट पीने पड़ते हैं । कमल की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राप्ति के लिये दल-दल और कीचड़ में होकर गुजरना पड़ता है । गुलाब का फूल तोड़ते समय काँटों का आघात लग जाना स्वाभाविक है । पहाड़ की चोटी तक पहुँचने में फिसलने, गिर पड़ने, ठोकर लगने की संभावनायें बनी रहती हैं ।

इस तरह जीवन के सभी क्षेत्रों में मनुष्य को विपरीतताओं का सामना करना पड़ता है । लेकिन बहुत से कम लोग जीवन पथ की इन सहज सम्भावनाओं को स्वीकार करके आगे बढ़ पाते हैं । अधिकांश लोग इनसे हार मान कर बैठ जाते हैं, निराश हो जाते हैं, भविष्य के प्रति निराशावादी दृष्टिकोण अपना लेते हैं । जीवन की समस्त सम्भावनाओं से मुँह मोड़ लेते हैं ।

कई कारण और भी हैं, जिनसे जीवन में निराशा पैदा होती है । शारीरिक और मानसिक अस्वस्था भी हमारे जीवन में निराशा भर देती है । शारीरिक अवस्था का हमारी मानसिक स्थिति पर काफी प्रभाव पड़ता है । कहावत है-'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन निवास करता है' किसी भी शारीरिक गड़बड़ी अथवा बीमारी से मानसिक संस्था कमजोर हो जाता है । वह ठीक-ठीक काम नहीं कर पाता । कोई भी काम शुरु किया कि थकावट, बेचैनी परेशान करने लगती है । चिड़चिड़ाहट, मन न लगना, जीवन और इसके कार्य-क्रमों में दिलचस्पी न रहना, उखड़ा-उखड़ा स्वभाव इनका बहुत कुछ कारण शारीरिक अस्वस्था ही रहता है । ऐसी स्थिति में मनुष्य जीवन को एक भार के रूप में समझने लगता है और निराशावादी बन जाता है ।

कई बार वातावरण परिस्थितियाँ भी मनुष्य को जीवन के प्रति निराश कर देती हैं । किसी आत्मीय व्यक्ति का निधन, मित्रों द्वारा धोखेबाजी या कोई घटना विशेष होने पर, विवाद आदि से निराशा पैदा हो जाती है । लेकिन इन सामयिक घटनाओं से पैदा होने वाली निराशा अधिक समय तक नहीं टिकती वह जल्दी ही दूर भी हो जाती है ।

इन बाह्य कारणों के अतिरिक्त कुछ आन्तरिक कारण भी होते हैं । अधिकांश निराश व्यक्तियों की मनः स्थिति असन्तुलित और विकृत होती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है । उनके सोचने-विचारने का तरीका रचनात्मक न होकर नकारात्मक होता है । उसमें निराशा और अवसाद घर कर लेते हैं तो चारों और असफलता ही दिखाई देती है । ऐसी स्थिति में मनुष्य का अपने ऊपर से विश्वास हट जाता है । विकृत मनः स्थिति के व्यक्ति जीवन में आने वाली सामान्य सी दुर्घटनाओं असफलताओं, कठिनाइयों को तूल देकर उसका भयावह स्वरूप गढ़ लेते हैं और उनके भार को ढोते रहते हैं । इनका मानसिक स्थिति पर इतना प्रभाव पड़ता है कि जीवन में सफलता, उत्साह, आशा की भावनायें ही प्रायः नष्ट हो जाती हैं कि मनुष्य के जीवन में निराशा, अवसाद ही शेष रहते हैं । खेल के मैंदान में उतरने से पूर्व या कोई काम शुरु करते ही अपनी सफलता में सन्देह करने लगते हैं और इसी मनः स्थिति के कारण उन्हें निराश ही होना पड़ता है । सफलता में सन्देह करने लगते हैं और इसी मनः स्थिति के कारण उन्हें निराश ही होना पड़ता है । सफलता की भावना लेकर परीक्षा में बैठने वालों की सफलता सन्देहजनक ही रहती है ।

इस तरह की विकृति मनःस्थिति के व्यक्ति जीवन और संसार को दुखों का आगार समझने लगते हैं, वे जीवन के उज्ज्वल पक्ष को प्रायः भूल से जाते हैं ।

निराशा चाहे किसी भी कारण से पैदा क्यों न हो, जीवन के लिये एक अभिशाप है । यह मनुष्य के कतृत्व और पुरुषार्थ को छलता की जंजीरों में जकड़ लेती है । मुन्शी प्रेमचन्द के शब्दों में-"निराशा चारों और अन्धकार बनकर दिखाई देती है ।" इसमें कोई सन्देह नहीं कि निराशा जीवन में अन्धकार पैदा कर देती है । सभी उज्ज्वल सम्भावनाओं को समाप्त कर देती है । यही जीवन की सारी प्रसन्नता, मस्ती, आनन्द को छीन लेती है । लोकमान्य तिलक ने कहा है-'निराश व्यक्ति के जीवन में कोई भी वस्तु प्रसन्नता नहीं भर सकती, उसे पग-पग पर मृत्यु दिखाई देती है ।" स्वेट मार्डेन ने लिखा है-"सभ्यता में उस व्यक्ति के लिये कोई स्थान नही जो जीवन से निराश हो बैठा है ।"

निराशा मनुष्य को कर्त्तव्य और पुरुषार्थ से हटाकर भाग्यवादी बना देती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है । उसकी गतिशीलता को कुण्ठित कर देती है । यह भाग्य की अदृश्य शक्ति को ही अपने जीवन का प्रेरक मानता है । उसी के भरोसे हाथ पर हाथ रखे बैठा रहता है । ऐसे निराशावादी व्यक्ति ही ज्योतिषी, भविष्यवक्ता आदि के पीछे चक्कर लगाते रहते हैं । अपने पुरुषार्थ के बल पर भाग्य-निर्माण करने की क्षमता को वे प्रायः भूल से जाते हैं ।

निराशा मनुष्य की शक्ति का बहुत बड़ा अंश खा जाती है । चेतना को हर लेती है । निराशाजनक विचारों, कल्पनाओं के चिन्तन में मनुष्य की शक्ति बड़ी तेजी से जलने लगती है । यही कारण है कि निराश व्यक्ति जल्दी ही कमजोर, रुग्ण और अशक्त हो जाते हैं । नियमानुसार रचनात्मक कार्य और विचारों से शक्तियाँ विकसित होती हैं । लेकिन निषेधात्मक विचार और हीन मान्यताओं से शक्ति का क्षय होने लगता है ।

निराशा मनुष्य की मानसिक स्थिति को भी अस्त-व्यस्त कर देती है । ऐसे व्यक्ति किसी भी काम में दृढ़ता के साथ नहीं लग सकते । यदि जैसे तैसे काम शुरू भी करते हैं तो जल्दी ही उनका मन उससे उखड़ने लगता है । तनिक सी कठिनाई, उलझन आने पर वे अस्त-व्यस्त हो जाते हैं । घबराहट और काल्पनिक भय उन्हें असन्तुलित बना देता है और वे जल्दी ही हाथ में लिये हुए काम छोड़ बैठते हैं । इस तरह निराश व्यक्ति के जीवन में असफलता पर असफलतायें आती रहती हैं ।

देखा जाय तो सबसे भयानक मौत भी अपने आप में इतनी भयंकर नहीं होती जितना भयंकर हमारी कल्पना और भय उसे बना देते हैं । जीवन में निराश व्यक्ति की मानसिक जटिलतायें इतनी बढ़ जाती हैं कि जीवन पथ में आने वाली सामान्य सी बातें भी उनके लिये पहाड़ जैसी कठिनाई के रूप में नजर आती हैं जीवन जो खेल की तरह जिया जा सकता है, उसके लिये एक जंजाल की तरह लगने लगता है । भला ऐसे व्यक्ति को जीवन में सफलता न मिले तो इसमें किसका दोष ?

इसमें कोई सन्देह नहीं कि निराशा चाहे वह छोटे ही रूप में क्यों न हो, एक भयंकर मानसिक बीमारी है, जो बढ़ते-बढ़ते एक दिन समस्त जीवन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को ही नष्ट-भ्रष्ट कर देती है । निराशा एक ऐसी भँवर है जो जीवन नैया को सरलता से डुबो देती है । निराशा एक दल-दल है, जिसमें फँसे हुए व्यक्ति के लिये पश्चाताप, दुःख, यन्त्रणा के सिवाय कुछ भी नहीं मिलता-

"निराशवादिनो मन्दा मोहवर्तेऽत्र दुस्तरे ।
निमग्ना अवसीदन्ति पंके गावो यथावशाः ॥"

निराशावादी लोग प्रगति की भावना से रहित होकर मोह के दुस्तर भँवर में पड़े हुए हैं । वे दल-दल में फँसी विवश गायों की तरह दुःख पाते रहते हैं ।

निराशा अपने तथा दूसरे लोगों में दुर्गुण, बुराइयां दखने की प्रेरणा देती है । जीवन और संसार के उज्ज्वल पहलुओं से ऐसा व्यक्ति सदैव आँखें मूँदे रहता है । वह स्वयम् को गन्दा समझता है साथ ही दूसरों को भी और इसी लिये वह सबसे घृणा करता है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि निराशावाद एक भयंकर राक्षस है जो हमारे आन्तरिक और बाह्य-जीवन को नष्ट करने की ताक में बैठा रहता है ।

मनुष्य के विकास, प्रगति और उज्ज्वल भविष्य की रचना में संसार की अन्य बाधायें सामान्य हैं, गौण हैं । ये हमारी गति को रोक नहीं सकतीं । जीवन-पथ का सबसे बड़ा अवरोध, सबसे बड़ी उलझन समस्या हमारी निराशा ही है जो हमारे पुरुषार्थ को पंगु बना देती है । हमारे मन को मार देती है, प्रयत्न में जड़ता की जंग लगा देती है । अतः प्रगति के इस भयानक दुश्मन को दूर करने के लिये हमें सदैव प्रयत्न-शील रहना चाहिए ।

अकारण दुःखी रहने की आदत

दुःख का मूल आधार मनुष्य के नकारात्मक विचार होते है । रचनात्मक, विधेयक विचार मनुष्य में बड़े परिश्रम और लम्बे अभ्यास के बाद परिपक्व होते हैं । किन्तु नकारात्मक मनोभूमि मनुष्य की सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति का परिणाम है, जिसके कारण मनुष्य में चिन्ता, परेशानी, क्लेश, भय, निराशा, हीनता, अवसाद के भावों का विस्तार होता है । और ये ही दूषित भाव मनुष्य के दुःख का आधार बनते हैं । बाह्य परिस्थितियों के अनुकूल और सुख साधनों से सम्पन्न होकर भी नकारात्मक मनोभूमि का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्ति दुःख ही अनुभव करता है । इतना ही नहीं वह सुख-आनन्द के अवसरों का भी लाभ नहीं उठा सकता । इस तरह जीवन में कभी भी दुःखों से छुटकारा नहीं मिल पाता है ।

जीवन पथ पर आगे बढ़ने के लिये हमें स्वस्थ, सबल, रचनात्मक मनोभूमि की अत्यन्त आवश्यकता है । इसके बिना हम एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकेंगे प्रत्युत हमारा असन्तुलित मन ही हमारे विनाश का कारण बन जायेगा । इसके लिये आत्म निरीक्षण द्वारा मनोविकारों को समझा जाय । अपनी मनोभूमि का पूरा-पूरा निराकरण किया जाय । जो भी नकारात्मक विचार हों उनसे पूर्णतया मुक्त होने का प्रयत्न किया जाय । स्मरण रहे आत्म-निरीक्षण की प्रक्रिया इतनी गम्भीर भी न हो जिससे जीवन के अन्य अंगों की उपेक्षा होने लगे । केवल अपने बारे में ही सोचते रहना, अपने व्यक्तित्व में घुसकर ही ताना-बाना बुनते रहना भी आगे चलकर मानसिक दोष बन जाते हैं । आवश्यकता इस बात की है कि अपनी मनोविकृति के बारे में गम्भीरता से सोचा जाय और फिर उसे सुधारने के लिये तत्परतापूर्वक लग जाया जाय ।

नकारात्मक कुविचारों को हटाकर रचनात्मक, विधेयक दृष्टिकोण अपनाने पर दुःखदायी परिस्थितियाँ भी मनुष्य के लिये सुखकर परिणाम पैदा कर देती हैं, वस्तुतः स्वस्थ मनोवृत्ति का व्यक्ति सुख और आनन्द को ही जीवन का सर्वस्व नहीं मानता । एक सीमा तक इन्हें उपयोगी भी माना जा सकता है ।

स्वस्थ मनोवृत्ति का मनुष्य दूसरों को सुखी देखकर अधिक सन्तोष अनुभव करता है । जीवन के प्रति सरस और सजीव दृष्टिकोण अपनाने के कारण अपनी कठिनाइयों से भी बहुत कुछ सीखता है और उन्हें एक उग्र अध्यापक मात्र मानकर स्वागत ही करता है ।

सुख-दुःख हमारे अपने ही पैदा किये हुए होते हैं । हमारी अपनी मनोभूमि का परिणाम है । हम अपनी मनोभूमि परिष्कृत करें, विचारों को उत्कृष्ट और रचनात्मक बनायें, भावनायें शुद्ध करें, इसी शर्त पर जीवन हमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुख-शान्ति, प्रसन्नता, आनन्द प्रदान करेगा अन्यथा वह सदा असन्तुष्ट और रूठा हुआ ही बैठा रहेगा और अपने लिये आनन्द के द्वार सदैव बन्द रहेंगे।

हम आशावादी बनें

आशा मनुष्य का शुभ संकल्प है। प्राणियों में वह अमृत है। जैसे सारा वनस्पति जगत् सूर्य से प्रेरणा पाता है वैसे ही मनुष्य में आशायें ही पूर्ण शक्ति का संचार करती हैं। मनुष्य की प्रत्येक उन्नति, जीवन की सफलता, जीवन लक्ष्य की प्राप्ति का संचार आशाओं द्वारा होता है। आशायें न होतीं तो संसार नीरस, अव्यक्त और निश्चेष्ट सा दिखाई देता। इसलिये भारतीय आचार्यों ने सदैव मानव समाज को यही समझाया है-

निराशया समं पापं मानवस्य न विद्यते।
तां समूलं समुत्सार्य ह्याशावादपरो भव॥

मनुष्य के निराशा से बढ़कर दूसरा कोई पाप नहीं इसलिये इसका समूल नाश करके आशावादी धर्म बनाना है। मानवीय प्रगति का आधार आशावादिता को ही मानते हुए उन्होंने आगे और भी कहा है-

मानवस्योन्नतिः सर्वा साफल्यं जीवनस्य च।
चरितार्थ्यं तथा सृष्टेराशावादे प्रतिष्ठितम्॥

संसार में आने के उद्देश्य की पूर्ति के लिये हे मनुष्यों ! तुम्हें सर्व प्रथम आशावादिता का आश्रय लेना चाहिए।

संसार के सारे कार्य आशाओं पर चलते हैं। विद्यार्थी अपना समय, धन लगाकर दिन न रात श्रमपूर्वक अध्ययन में लगा रहता है। अध्यापकों की झिड़कियाँ सुनता है, अपना सुख-चैन सभी छोड़कर केवल ज्ञानार्जन में लगा रहता है। इसलिये कि उसे यह आशा होती है कि वह पढ़-लिखकर सभ्य, सुशिक्षित नागरिक बनेगा। देश जाति के उत्थान में भागीदार बनेगा। सम्मान पूर्वक जीवन जियेगा। खेत खलिहानों से लेकर कल करखानों तक में जितने भी व्यवसाय फैले हैं उनके मूल में कोई न कोई आशा ही क्रियाशील होती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आशायें जीवन का शुभ लक्षण हैं । इनके सहारे मनुष्य घोर विपत्तियों में दुश्चिन्ताओं को हँसते-हँसते जीत लेता है । जो केवल दुनियाँ का रोना रोते रहते हैं उन्हें अर्द्धमृत ही समझना चाहिए, किन्तु आशावान् व्यक्ति पौरुष के लिये सदैव समुद्यत रहता है । वह अपने हाथ में फावड़ा लेकर टूट पड़ता है खेतों में मिट्टी से सोना पैदा कर लेता है । आशावान् व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करता है । वह औरों के आगे अपना हाथ नहीं बढ़ाता बल्कि औरों को जीवन देता है ।

तुर्क सम्राट तैमूरलङ्ग कई युद्धों में लगातार पराजित होता रहा। इक्कीसवीं बार उसके अङ्ग-रक्षक सैनिकों को छोड़कर और कोई शेष न रहा । वह एक गुफा में बैठा विचार कर रहा था, तभी एक चिकने पत्थर पर चढ़ने का प्रयास करती हुई चींटी दिखाई दी । वह बार-बार गिर जाती किन्तु ऊपर चढंने की आशा से पुनः प्रयास करती । यह देखकर तैमूर के हृदय में फिर से आशा का संचार हुआ । उसने सोचा यदि छोटी-सी चींटी इतनी बार असफल होने पर भी निराश नहीं होती और वह अपना प्रयत्न नहीं छोड़ती, इतना साहस देख सोचा तो मैं ही हिम्मत क्यों हारूँ ? वह नई शक्ति जुटाने में लग पड़ा और फिर से दुश्मन पर विजय पाई । आशायें पुरूषार्थ को जगा देती हैं जिसमें मनुष्य बड़े-से-बड़े कार्य करने में तैमूरलङ्ग के समान ही समर्थ होता है ।

चरित्रवान् व्यक्ति कभी निराश नहीं होते क्योंकि उनकी भावनायें उदात्त एवं ऊर्ध्वगामी होती हैं । वे हर क्षण कठिनाइयों से लड़कर अपना अभीष्ट पा लेने की क्षमता रखते हैं । प्रतिभाशाली व्यक्तियों को निराशा के क्षणों में भी आशा का प्रकाश दिखाई देता है, इसी के सहारे वे अपनी परिस्थितियों में सुधार कर लेते हैं । सत्यवादी हरिश्चन्द्र यदि गुरू-दक्षिणा चुकाने में निराश हो गये होते तो आज संसार में उन्हें कौन जानता ? उनके पास वह सब कुछ तो नहीं था जिसकी उनके गुरूदेव ने याचना की थी । पर स्वयं को मुसीबतों में डालकर, पत्नी और बच्चे को भी बेचकर अपनी गुरू-दक्षिणा चुकायी और आशावादिता के शुभ-लक्षणों का परिचय दिया । मनुष्य परिस्थितियों का वशवर्ती नहीं वह अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करता है, किन्तु यह तभी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सम्भव है जब वह आशावादी हो । ऐसा व्यक्ति किसी भी कार्य को करने के पहले उस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करता है । आने वाली कठिनाइयों का निराकरण खोज निकालता है, आवश्यक साधन जुटा लेता है, तब पूर्ण तत्परता व लगन के साथ कार्य में प्रवृत्त होता है । जिससे बड़ी–से–बड़ी परिस्थितियाँ भी उसका कुछ बिगाड़ नहीं पातीं । सफलता ऐसे ही व्यक्ति पाया करते हैं ।

आशा और आत्म–विश्वास चिरसङ्गी हैं । समुद्र में लहरें स्वाभाविक हैं, दीप शिखा का प्रकाश से अटूट सम्बन्ध है, अग्नि में ऊष्मा होगी ही। आशावादी व्यक्ति का आत्म–विश्वासी होना भी अवश्यम्भावी है । आत्म–विश्वास से आन्तरिक शक्तियाँ जागृत होती हैं । इन शक्तियों को वह जिस कार्य में जुटा दे वहीं आश्चर्यजनक सफलता दिखाई देने लगेगी । सम्पूर्ण मानसिक चेष्टाओं से किये हुए कार्य प्रायः असफल नहीं होते । किन्तु निराशा वह मानवीय दुर्गुण है जो बुद्धि को भ्रमित कर देता है । मानसिक शक्तियों को लुञ्ज–पुञ्ज कर देता है । ऐसा व्यक्ति आधे मन से डरा–डरा–सा कार्य करेगा। ऐसी अवस्था में सफलता प्राप्त कर सकना ही क्या होगा ? जहाँ आशा नहीं वहाँ प्रयत्न नहीं । बिना प्रयत्न के ध्येय की प्राप्ति न आज तक कोई कर सका है न आगे सम्भव है ।

विद्वान विचारक स्वेट मार्डेन ने लिखा है "निराशावाद भयङ्कर राक्षस है जो हमारे नाश की ताक में बैठा रहता है ।" निराशावादी प्रगति की भावना का त्याग कर देते हैं । यदि कभी उन्नति करने का कुछ ख्याल आया भी तो विपत्तियों के पहाड़ उन्हें दिखाई देने लगते हैं । कार्य आरम्भ नहीं हुआ कि चिन्ताओं के बादल मँडराने लगे । पर आशावादी व्यक्ति प्रसन्न होकर कार्य प्रारम्भ करता है । गतिमान बने रहने के लिये मुसीबतों को सहायक मानकर चलता है । उत्साहपूर्वक अन्त तक पूर्व नियोजित कार्य में सन्नद्ध रहता है इसी से उसकी आशायें फलवती होती हैं श। आशा ही जीवन है, निराशा को तो मृत्यु ही मानना चाहिये ।

मुद्रक: युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org